Freedom Struggle - Part VIII

Detailed Course on Modern History

Dr Amit Kumar Singh • Lesson 46 • Oct 27, 2021

क्रांति का दूसरा चरण



unacademy

NTA UGC NET HISTORY

© Dr. Amit Kumar Singh

Freedom Struggle - Revolutionary Moments

Dr. Amit Kumar Singh

क्रांतिकारी आन्दोलन- द्वितीय किश्त

(Second Phase of Revolutionary Movement)

- 14 फरवरी, 1922 के चौरी-चौरा हत्याकाण्ड के कारण असहयोग आन्दोलन को गांधीजी द्वारा वापस ले लिया गया तो गाँधी के अहिंसा से अनेक युवाओं का विश्वास उठ गया

© Dr. Amit Kumar Singh

- रूस, चीन, आयरलैंड, तुर्की और मिस्त्र की क्रांतियों ने उन्हें नवीन क्रांति के उपायों का परिचय कराया
- राम प्रसाद बिस्मिल, सचीन्द्र सान्याल, सूर्यसेन, चन्द्रशेखर आजाद एवं सुभाष चन्द्रबोस जैसे क्रांतिकारी नेता, इस क्रांति के दुसरे चरण के नायक बनकर उभरे
- अनेक नये क्रांतिकारी एवं आतंकवादी संगठनों की स्थापना हुई।
- ये संगठन पंजाब, दिल्ली, संयुक्त प्रांत, बिहार एवं बंगाल में अधिक सक्रिय रहे।

© Dr. Amit Kumar Singh

नौजवान सभा

- **स्थापना :** मार्च 1926, पंजाब
- **संस्थापक :** भगत सिंह, छवील दास एवं यशपाल
- **उद्देश्य :** देश के नवयुवकों में देश-भक्ति की भावना जागृत कर मजदूर और किसानों के राज्य की स्थापना करना।
- **मुख्य कार्यकर्ता :** केदारनाथ सहगल, शार्दूल सिंह, समाजवादी संघीय गणतंत्र की स्थापना।
- **सक्रिय सदस्य :** राम प्रसाद बिस्मिल, योगेश चन्द्र चटर्जी, अशफाक उल्ला, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राजेन्द्र लाहिडी एवं रोशन सिंह आदि।

© Dr. Amit Kumar Singh

- कांतिकारी आन्दोलन के द्वितीय चरण में क्रांतिकारियों को क्रांति के संचालन एवं उत्तम परिणाम प्राप्त करने हेतु एक अखिल भारतीय संगठन की आवश्यकता महसूस हुई।
- इस निमित्त अक्टूबर 1924, में युवा क्रांतिकारियों ने कानपुर में एक सम्मेलन बुलाया तथा ' हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' (H.R.A.) नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की।
- इस संगठन ने 1925 में रिवोल्यूशनरी नामक एक पर्चा निकाला।
- जिसमें रूस की भांति भारत में भी सशस्त्र विद्रोह का आह्वान किया गया, जिससे ब्रिटिश सत्ता को उखाड़ फेंका जा सके।
- इसके लिए धन की आवश्यकता थी और धन एकत्रित करने के लिए काकोरी में पहली बड़ी सफल घटना को अंजाम दिया गया।

© Dr. Amit Kumar Singh



14 Feb 1922 – चौरी चौरा

1926 नौजवान सभा – हसरत मोहानी, पराणल, बिस्मिल, अशफाक

Russia
China
Ireland
Turkey
Egypt

→ Revolutionary

काकोरी – Hindustan Republican Association

काकोरी

काकोरी काण्ड (9 अगस्त, 1925 ई0)

- उत्तर-रेलवे के लखनऊ सहारनपुर संभाग के काकोरी (लखनऊ) नामक स्थान पर 9 अगस्त, 1925 को 8 डाउन सहारनपुर लखनऊ पैसेन्जर ट्रेन पर डकैती डालकर सरकारी खजाने को लूट लिया गया।
- इस काण्ड को ही 'काकोरी कांड' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है।
- इस काण्ड में 29 लोगों को गिरफ्तार कर उन पर केस चलाया गया, जिसमें चार को फांसी दी गई।
- राजेन्द्र लाहिड़ी को गोड़ा जेल में, रोशन सिंह को इलाहाबाद जेल में, राम प्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर जेल में तथा अशफाक उल्ला खां को फैजाबाद जेल में फांसी दी गई।
- एक अभियुक्त चन्द्रशेखर आजाद फरार हो गये।

© Dr. Amit Kumar Singh

हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (H.S.R.A.)

- **स्थापना :** 10 सितम्बर, 1928 को फिरोजशाह कोटला मैदान, दिल्ली में।
- **संस्थापक :** चन्द्रशेखर आजाद
- **उद्देश्य :** क्रांतिकारी कार्यवाही द्वारा भारत में समाजवादी गणतांत्रिक राज्य की स्थापना।
- **सक्रिय सदस्य :** भगवती चरण बोहरा, विजय कुमार सिन्हा, जयदेव कपूर, शिव वर्मा, भगत सिंह एवं सुखदेव आदि।
- काकोरी कांड के बाद हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) का अस्तित्व समाप्त प्राय सा हो गया।

© Dr. Amit Kumar Singh

- अतः इसे पुनः संगठित करने हेतु फिरोजशाह कोटला मैदान (दिल्ली) में चन्द्रशेखर आजाद के नेतृत्व में H.R.A. के प्रतिनिधियों ने एक बैठक की, जिसमें H.R.A. का नाम बदल कर H.S.R.A. कर दिया गया।
- यह एक लोकतांत्रिक संगठन था, जिसमें फैसले बहुमत के आधार पर होते थे।
- इनका उद्देश्य भारत में एक समाजवादी गणतंत्रात्मक राज्य की स्थापना करना था।
- इस संगठन से सम्बन्धित तीन प्रमुख घटनाएँ थीं- साण्डर्स की हत्या, असेम्बली बम कांड एवं लाहौर षड्यंत्र केस।

© Dr. Amit Kumar Singh

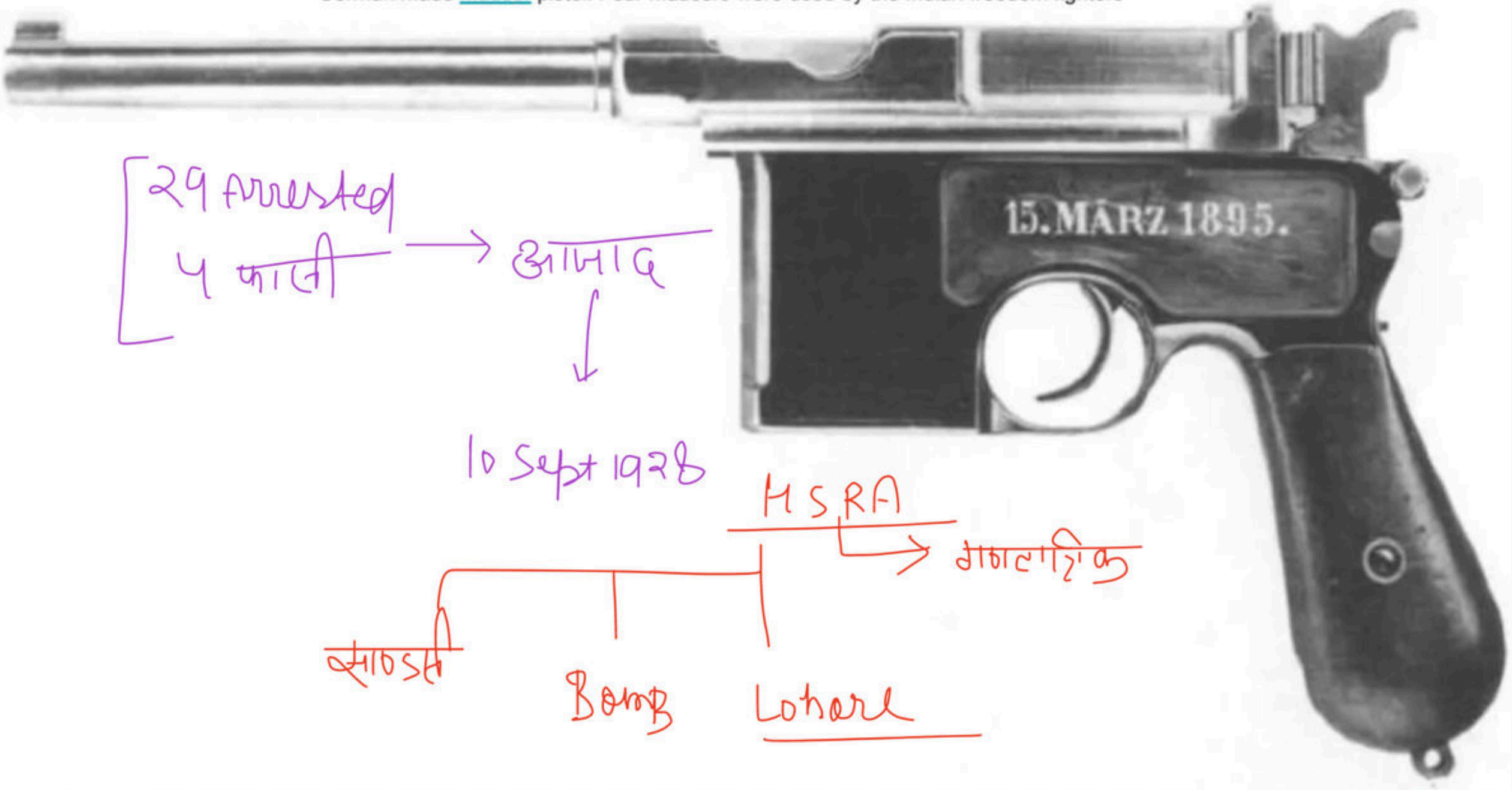
- **साण्डर्स की हत्या (1928 ई0)**
- 'शेर-ए-पंजाब' की उपाधि से विभूषित लाला लाजपत राय की साइमन कमीशन के विरोध प्रदर्शन के दौरान 30 अक्टूबर, 1928 को लाहौर के पुलिस अधीक्षक स्कॉट के लाठी के आघातों से 17 नवम्बर, 1928 ई0 को मृत्यु हो गई।
- H.S.R.A. के क्रांतिकारियों ने इसका बदला स्कॉट की हत्या करके लेने का निश्चिय किया।
- किन्तु स्कॉट की जगह धोखे से 17 दिसम्बर, 1928 को लाहौर के सहायक पुलिस अधीक्षक साण्डर्स की गोली मारकर हत्या कर दी गयी।

© Dr. Amit Kumar Singh

- इस वारदात में भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरु सुखदेव और जय गोपाल शामिल थे।
- ध्यातव्य है कि यह H.S.R.A. द्वारा की गई पहली बड़ी क्रांतिकारी घटना थी।

© Dr. Amit Kumar Singh

German made Mauser pistol. Four Mausers were used by the Indian freedom fighters



29 arrested
4 फांसी → आषाढ

10 Sept 1928

HSRA
→ शाहदाहिक

साण्डर्स

Bomb

Lohare

असेम्बली बम कांड (1929 ई0)

- हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (H.S.R.A.) की दूसरी प्रमुख घटना थी- 8 अप्रैल, 1929 को भगत सिंह एवं बटुकेश्वर दत्त द्वारा केन्द्रीय विधान सभा में ट्रेड डिसप्यूट बिल और पब्लिक सेफ्टी बिल के विरोध में बम फेंकना।
- इस बमकांड का उद्देश्य किसी को हानि पहुंचना नहीं था। बल्कि 'बहरे कानों' तक अपनी आवाज पहुंचाने के लिए था।
- ध्यातव्य है कि असेम्बली में बम फेंकते समय ही पहली बार भगत सिंह ने 'इन्कलाब जिन्दाबाद' का नारा दिया था।
- यद्यपि इस नारे का सृजन मौलाना हसरत मोहानी ने किया था।

© Dr. Amit Kumar Singh

- उक्त दोनों क्रांतिकारियों ने स्वेच्छा से अपनी गिरफ्तारी दे दी।
- उन पर केन्द्रीय विधायिका बम कांड का मुकदमा चलाया गया।
- भगत और दत्त को इस कांड के लिए उम्र कैद की सजा दी गई।

© Dr. Amit Kumar Singh

The Tribune.

VOL. LI. NO. 70 LAHORE, WEDNESDAY, MARCH 25, 1931. Price One Anna

BHAGAT SINGH, RAJGURU AND SUKHDEV EXECUTED.

NO "LAST INTERVIEW" WITH RELATIONS.

Shouts Emerge From Jail.

DEAD BODIES SECRETLY DISPOSED OF

Removed to Distant Place.



Thick Veil of Secrecy.

Relatives' Futile Quest for Dead Bodies.

Bhagat Singh's Letter

DEAD BODIES REMAINED.

Not Given to Relatives

Gandhi's Advice

MUCH TERROR NOT BEING CARRIED OUT.

Congressmen's Feeling.

TWISTED HOPSCAGE OF ROYAL SCOT

Fastest Train in World

AVOID DELAY & DISCOMFORT
Optical Instruments

साउथ की एक्ट →

Scott → 17 Nov 1928

8 April 1929.

Trade dispute

Public Safety Bill

Hunger Strike

भगत सिंह

IB फाइल

साउथ ब्रिटिश

भगत सिंह

Amit Kumar Singh

लाहौर षडयंत्र केस (1929 ई.)

- विधानसभा बम कांड एवं जे.पी. साण्डर्स हत्याकांड में शामिल अभियुक्तों और H.S.R.A. के अन्य सदस्यों सहित कुल 18 क्रांतिकारियों के ऊपर देश द्रोह के साथ-साथ हत्या का भी मुकदमा चलाया गया, जो 'लाहौर षड्यंत्र केस' या 'भगत सिंह ट्रायल' के नाम से इतिहास में दर्ज है।
- जेल में इन क्रान्तिकारियों के साथ साधारण कैदी की तरह व्यवहार किया जा रहा था।
- कारण स्वरूप नौजवानों ने भूख हड़ताल शुरू कर दिया।
- इन्हीं भूख हड़तालियों में जतिन दास भी थे जो 64 दिन (13 जुलाई से 13 सितम्बर) की भूख हड़ताल के बाद शहीद हो गए।

© Dr. Amit Kumar Singh

- 1930 में लाहौर षड्यन्त्र केस के निर्णय के आधार पर भगत सिंह, राजगुरू तथा सुखदेव को फांसी की सजा हुयी।
- 23 मार्च, 1931 को तीनों को फांसी दे दी गई।
- इनकी मृत्यु पर पूरा देश शोकाकुल था।
- किन्तु फांसी होने के बाद भी क्रांतिकारी गतिविधियाँ जारी रहीं।
- भगत सिंह और अन्य को फांसी देने के पूर्व ही 27 फरवरी, 1931 को प्रयागराज (इलाहाबाद) के अल्फ्रेड पार्क में चन्द्रशेखर आजाद, यशपाल तथा सुखदेव राज से गहन मंत्रणा कर रहे थे कि तब तक किसी की गुप्त सूचना से C.I.D. का S.S.P नॉट बाबर कर्नलगंज की पुलिस फोर्स के साथ वहाँ आ पहुँची।

© Dr Amit Kumar Singh

बाबर → यशपाल

1932

(पत्रकार)

साहित्यकार



By Unknown author - Punjab State Archives, CC BY-SA 4.0,
https://commons.wikimedia.org/w/index.php?curid=110035656

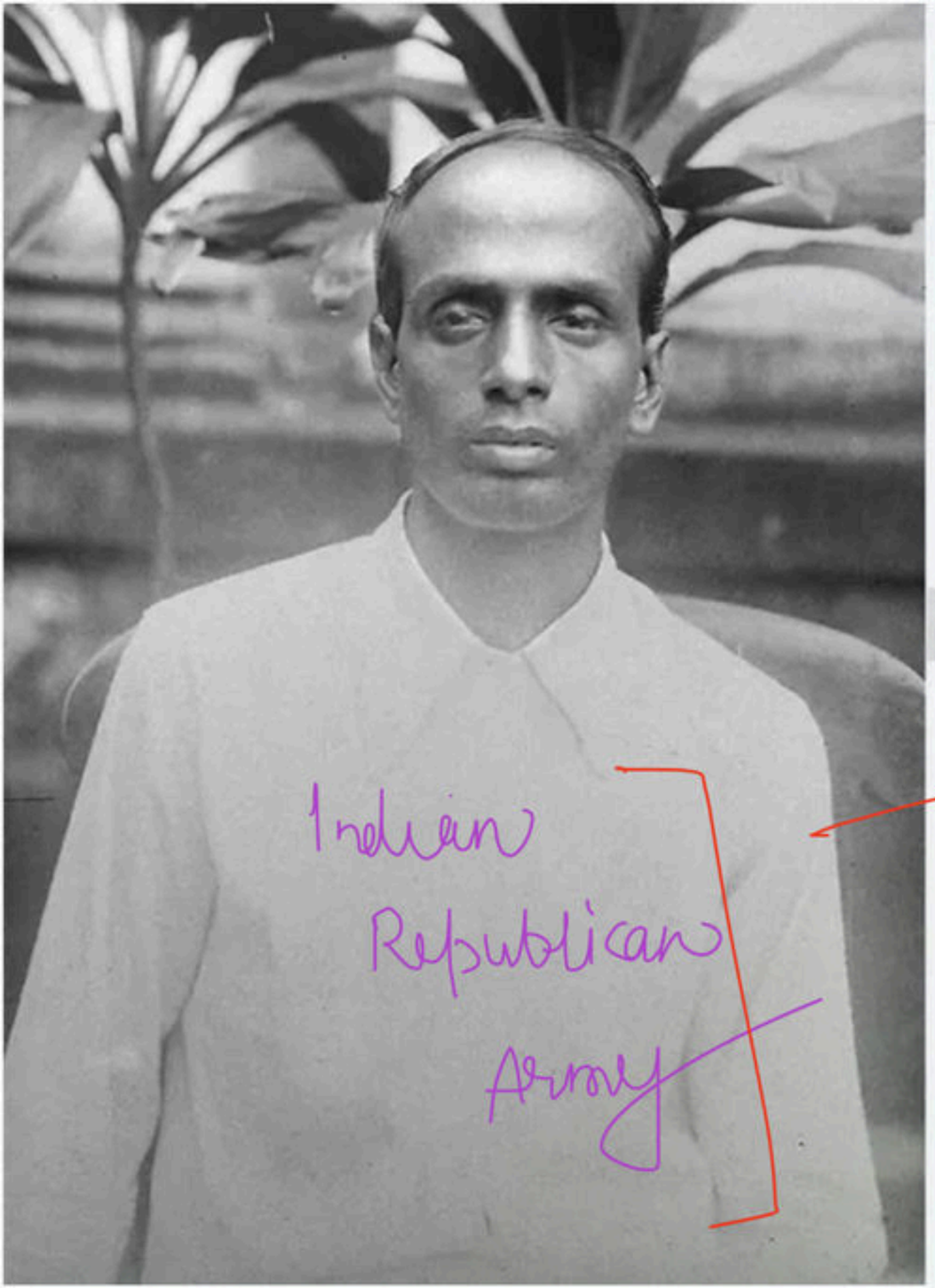
- 'आजाद' ने मुठभेड़ के दौरान स्वयं को गोली मार ली और शहीद हो गये।
- 'आजाद' के मृत्योपरान्त H.S.R.A. के नेता यशपाल चुने गये।
- किन्तु 1932 में इन्हें भी इलाहाबाद से गिरफ्तार कर 14 वर्ष के कारावास की सजा दी गई।
- परन्तु लगभग छः वर्ष की सजा के उपरान्त 2 मार्च 1938 को उ.प्र. के प्रथम मुख्यमंत्री पं. गोविन्द बल्लभ पंत ने इन्हें जेल से मुक्त कर दिया।
- तदोपरान्त यशपाल जी ने जीवन पर्यन्त हिन्दी साहित्य की सेवा की।

© Dr. Amit Kumar Singh

चटगांव शस्त्रागार लूटकांड (1930 ई.)

- क्रांतिकारी आन्दोलन के द्वितीय चरण में एक बार पुनः बंगाल क्रांतिकारी आतंकवाद का प्रमुख केन्द्र बन गया।
- युगान्तर तथा अनुशीलन जैसी पुरानी क्रांतिकारी समितियाँ पुनः सक्रिय हो उठी।
- हेमचन्द्र घोष तथा लीला नाग जैसे क्रांतिकारियों ने 'बंगाल स्वयं सेवक संघ' और अनिल राय ने 'श्री संघ' नामक संगठन की स्थापना की।
- नये क्रांतिकारी संगठनों में सूर्यसेन द्वारा स्थापित 'इण्डियन रिपब्लिकन आर्मी' (I.R.A.) सबसे अधिक सक्रिय था।

© Dr. Amit Kumar Singh



Indian
Republican
Army

पुरा-८
अभिलेख

श्री संघ

अभिलाष

बंगाल स्वयं संघ

हेमच-६

लीला नाग

पटगाव

अस्थायी सरकार

राष्ट्रपति

mit Kumar Singh

इण्डियन रिपब्लिकन आर्मी (I.R.A.)

- **स्थापना :** 1930 चटगांव (बंगाल)
- **संस्थापक :** सूर्य सेन 'मास्टर दा'
- **उद्देश्य :** ब्रिटिश भारत सरकार को उखाड़ फेंकना।
- **प्रमुख कार्य :** चटगांव, बारीसाल एवं मेमन सिंह स्थित शस्त्रागारों को लूटना।
- **प्रमुख सदस्य :** अनन्त सिंह, अंबिका चक्रवर्ती लोकीनाथ, बाउल, प्रीतिलता वादेदार, कल्पना दत्त, आनंद गुप्ता, टेगराबल, गणेश घोष, फकीर अहमद, मीर अहमद, तनु मियाँ एवं सत्तार आदि।

© Dr. Amit Kumar Singh

- सूर्य सेन (1894-12 जनवरी 1934) भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महान् क्रान्तिकारी थे।
- उन्होंने 'इंडियन रिपब्लिकन आर्मी' की स्थापना की और चटगांव विद्रोह का सफल नेतृत्व किया।
- वे नेशनल हाईस्कूल में सीनियर ग्रेजुएट शिक्षक के रूप में कार्यरत थे और लोग प्यार से उन्हें 'मास्टर दा' कहकर सम्बोधित करते थे।
- उनके I.R.A. के गठन से ऐसा प्रतीत होता था जैसे बंगाल में क्रांति की लहर आ गई हो और इसी के चलते सूर्य सेन के नेतृत्व में स्वतंत्रता के दीवानों ने 18 अप्रैल 1930 को चटगांव, बारीसाल तथा मेमन सिंह स्थित सरकारी शस्त्रागार पर हमला बोल दिया तथा हथियारों पर कब्जा जमाकर ब्रिटिश शासन के खात्मे की घोषणा कर दी।

© Dr Arun Kumar Singh

- शस्त्रागार पर कब्जे के बाद 65 सदस्यीय क्रांतिकारी दल के समक्ष सूर्यसेन ने बंदेमातरम् एवं इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा लगाया और तिरंगा झण्डा फहराया तथा अस्थायी सरकार का गठन किया, जिसके राष्ट्रपति वे स्वयं बने।
- कुछ दिन के लिए यहां अंग्रेजों का शासन नहीं रहा।
- चटगांव के शस्त्रागार पर I.R.A. के हमले ने आग में घी का काम किया और बंगाल से बाहर देश के कई अन्य हिस्सों में स्वाधीनता संग्राम काफी उग्र हो उठा।
- इस घटना का असर कई महीनों तक रहा।
- पंजाब में हरिकिशन ने पंजाब के गवर्नर की हत्या की कोशिश की।

© Dr. Amit Kumar Singh

- दिसंबर 1930 में तीन जवानों विनय बोस, बादल गुप्ता तथा दिनेश गुप्ता ने कोलकाता की राइटर्स बिल्डिंग में प्रवेश किया और स्वाधीनता सेनानियों पर जुल्म ढहाने वाले पुलिस अधीक्षक को मौत के घाट उतार दिया।
- I.R.A. की इस जंग में दो लड़कियों प्रीतिलता वादेदार तथा कल्पना दत्त ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- अपनी सत्ता डगमगाते देख अंग्रेज बर्बरता पर उतर आए और क्रांति को दबाने के लिए पूरी ताकत झोंक दी।
- I.R.A. के अधिकतर योद्धा गिरफ्तार कर लिए गए टेगराबल लड़ते हुए मारे गए, तथा तारकेश्वर दत्तीदार को फांसी पर लटका दिया गया।
- अंग्रेजों के चंगुल से बचने के लिए प्रीतिलता ने जहर खाकर मातृभूमि के लिए अपनी शाहदत दे दी, जबकि कल्पना दत्त का आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

© Dr. Amit Kumar Singh

- 16 फरवरी, 1933 को सूर्यसेन गिरफ्तार कर लिए गए।
- उनके ऊपर मुकदमा चला और 12 जनवरी 1934 को उन्हें फांसी दे दी गई।
- चटगाँव शस्त्रागार हमले से प्रेरित होकर बंगाल के अन्य भागों में क्रान्तिकारी आतंकवादी गतिविधियों में तीव्रता आ गई।
- यथा : 24 दिसम्बर, 1931 ई0 को कुम्मीला की दो स्कूली छात्राओं- शांति घोष तथा सनीति चौधरी ने वहाँ के जिला अधिकारी (बी.जी. स्टीवेंसन) की गोली मारकर हत्या कर दी, इसके अतिरिक्त 6 फरवरी, 1932 ई0 में बीना दास ने कलकत्ता विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में उपाधि ग्रहण करते समय बंगाल के गवर्नर सर स्टैनले जैक्सन को गोली मार दी।
- परन्तु गवर्नर बच गए और बीनादास को दस साल के कारावास का दण्ड मिला।

© Dr. Amit Kumar Singh

- इस प्रकार बंगाल में क्रांतिकारी गतिविधियां काफी तीव्र रही।
- युवाओं के साथ-साथ युवतियों ने भी सक्रिय भागीदारी निभाई।
- किन्तु सूर्यसेन की मृत्यु के बाद बंगाल से क्रांतिकारी गतिविधियों का अन्त हो गया।
- 1935 के भारत सरकार अधिनियम के पारित होने पर आतंकवादी गतिविधियों में कुछ कमी आई और 1939 तक शान्ति बनी रही, परन्तु जब अंग्रेजी सरकार ने भारतीय जनता की अनुमति के बिना भारत को द्वितीय विश्वयुद्ध में धकेल दिया तो पुनः अवस्था बिगड़ती चली गई।
- क्रिप्स सद्भाव मण्डल की असफलता (मार्च 1942), कांग्रेस का 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पारित करना (8 अगस्त, 1942), तथा गांधी और उनके सहयोगियों की गिरफ्तारी (9 अगस्त, 1942) ने पुनः क्रान्तिकारियों को अपनी गतिविधियां आरम्भ करने पर बाध्य कर दिया।

© Dr. Amit Kumar Singh

University of Calcutta

MATRICULATION EXAMINATION

I certify that Pritilata Waddedar

of Chittagong Dr. Khastagir's High School for Girls aged

~~years~~ ~~months~~ on the 1st of March, 1928, duly

passed the Matriculation Examination, held in the month of

March, 1928, and was placed in the First Division.

SENATE HOUSE:

The 14th June 1928.

Controller of Examinations.

- अगस्त 1942 में भारत के भिन्न-भिन्न भागों में एक लोकप्रिय विद्रोह हुआ।
- इसमें गांधीजी के अहिंसावादी अनुयायियों तथा हिंसावादी क्रान्तिकारियों दोनों ने मिलकर विदेशी सत्ता को उखाड़ फेंकने का असफल प्रयत्न किया।
- इस आन्दोलन के मुख्य पात्र सभाषचन्द्र बोस तथा जय प्रकाश नारायण थे।
- जय प्रकाश नारायण तथा इनके सहयोगियों ने आन्तरिक तोड़फोड़ की नीति अपनाई तथा सुभाष बाबू ने देश से बाहर जाकर जर्मनी तथा जापान की सहायता

© Dr. Amit Kumar Singh

- से भारतीय राष्ट्रीय सेना (Indian National Army or I.N.A.) का गठन कर भारत पर आक्रमण करने का प्रयत्न किया।
- 1946 ई. में 'भारतीय नौ-सेना विद्रोह' को भी राष्ट्रवादी क्रांतिकारियों के प्रयत्नों में सम्मिलित किया गया था।
- उसने भी भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति में सहायता दी यद्यपि वह भी शीघ्र ही समाप्त हो गया। यथा :

© Dr. Amit Kumar Singh



1935 — 1939

[1942 — हिंसा + अहिंसा

जयप्रकाश

सुभाष — INA

1946 मीटिंग

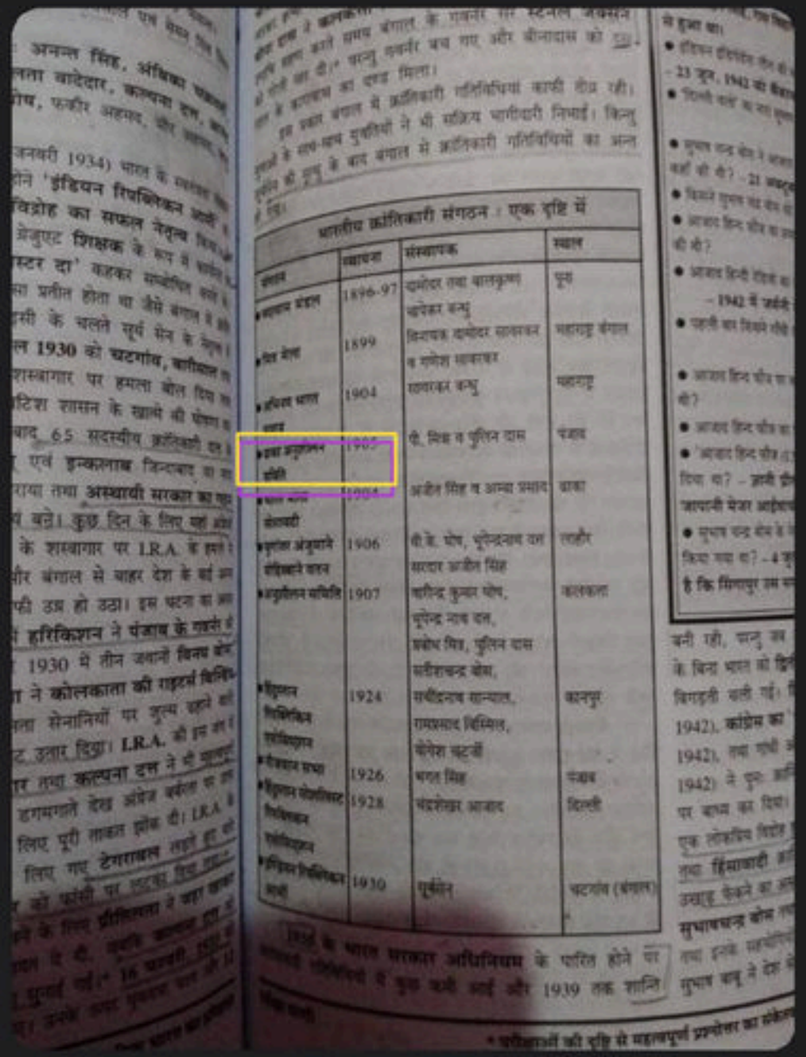
भारतीय क्रांतिकारी संगठन			
संगठन	**स्थापना**	**संस्थापक**	**स्थल**
व्यायाम मण्डल	1896-97	दामोदर तथा बालकृषण चापेकर बंधु	पूना
मित्र मेला	1899	विनायक दामोदर सावरकर व गणेश सावरकर	महाराष्ट्र बंगाल
अभिनव भारत समाज	1904	सावरकर बंधु	महाराष्ट्र
ढाका अनुशीलन समिति	1905	पी. मित्रा व पुलिन दास	पंजाब
भारत माता सोसाइटी	1904	अजीत सिंह व अम्बा प्रसाद	ढाका
युगांतर अंजुमाने मोहिबबाने वतन	1906	वी के घोष, भूपेन्द्र दत्त सरदार अजीत सिंह	लाहौर
अनुशीलन समिति	1907	वारीन्द्र कुमार घोष, भूपेन्द्र नाथ दत्त, प्रबोध मित्र, पुलिन दास, सतीशचंद्र बॉस	कलकत्ता
हिंदुस्तान रेपब्लिकेशन एसोसिएशन	1924	सतीशचंद्र सान्याल, रामप्रसाद बिस्मिल, योगेश चटर्जी	कानपुर
नौजवान सभा	1926	भगत सिंह	पंजाब
हिंदुस्तान सोशलिस्ट रेपब्लिकेशन एसोसिएशन	1928	चंद्र शेखर आजाद	दिल्ली
इंडियन रेपब्लिकेशन आर्मी	1930	सूर्यसेन	चटगाँव(बंगाल)

© Dr. Amit Kumar Singh

unacademy

▲ 1 • Asked by Rahul Kuma...

Please help me with this doubt



भारतीय क्रांतिकारी संगठन : एक दृष्टि में

संगठन	स्थापना	संस्थापक	स्थान
• स्वदेश बांधव	1896-97	दामोदर तथा बालकृष्ण चापेकर बन्धु	पुणे
• देश सेवा	1899	विनायक दामोदर सावरकर व गणेश सावरकर	महाराष्ट्र/बंगाल
• मित्र मेला	1904	सावरकर बन्धु	महाराष्ट्र
• युगांतर समिति	1905	वी. भिक्षु व पुलिन दास	पंजाब
• अनुशीलन समिति	1904	अतीन सिंह व अन्य प्रमाद	ढाका
• युगांतर अनुशीलन समिति	1906	वी.के. घोष, भूपेन्द्रनाथ दत्त सरदार अजीत सिंह	लाहौर
• अनुशीलन समिति	1907	बारीन्द्र कुमार घोष, भूपेन्द्र नाथ दत्त, प्रबोध सिंह, पुलिन दास मनीराचन्द्र बोस,	कलकत्ता
• हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन	1924	शचीन्द्रनाथ सान्याल, रामप्रसाद बिस्मिल, योगेश चटर्जी	कानपुर
• नौजवान सभा	1926	भगत सिंह	पंजाब
• हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन	1928	चंद्रशेखर आजाद	दिल्ली
• हिंदुस्तान रिपब्लिकन आर्मी	1930	सूर्यसेन	चटगांव (बंगाल)

Unacademy - India's largest lear | Unacademy - India's largest | Dhaka Anushilan Samiti - Wikipe
https://en.wikipedia.org/wiki/Dhaka_Anushilan_Samiti

WIKIPEDIA
The Free Encyclopedia

Main page
Contents
Current events
Random article
About Wikipedia
Contact us
Donate

Contribute
Help
Learn to edit
Community portal
Recent changes
Upload file

Tools
What links here
Related changes
Special pages
Permanent link
Page information

Dhaka Anushilan Samiti

From Wikipedia, the free encyclopedia

Dhaka Anushilan Samiti was a branch of the Anushilan Samiti founded in the city of Dhaka in November 1905. Initially a group of eighty under the leadership of Pulin Behari Das, it "spread like wildfire" throughout the province of East Bengal. More than 500 branches were opened, linked by a "close and detailed organization" to Pulin's headquarters at Dhaka. It absorbed smaller groups in the province and soon overshadowed its parent organization in Calcutta. Branches of Dhaka Anushilan emerged in the towns of Jessore, Khulna, Faridpur, Rajnagar, Rajendrapur, Mohanpur, Barvali, Bakarganj, and other places. Estimates of Dhaka Anushilan Samiti's reach show a membership of between 15,000 and 20,000 members. Within another two years, Dhaka Anushilan would devolve its aims from the Swadeshi movement to the dedicated aim of political terrorism.[1][2] The *Dhaka Anushilan Samiti* embarked on a radical program of political terrorism. It broke with the *Jugantar group* due to differences with Aurobindo's approach of slowly building a base for a revolution with a mass base. The Dhaka group saw this as slow and insufficient and sought immediate action and results. It was responsible for several political assassinations, most notably the murder of D.C. Allen. However, it reached a temporary halt after the arrest and deportation of Pulin Das and the Barisal Conspiracy Case in 1913. Dhaka Anushilan decided not to participate in the German plot of World War I. After the war, it continued in its violent movement, and some of its members went on to form the Neo-violence group.

Anushilan Samiti



Influence

List [show]
Anushilan Samiti

List [show]
Notable events

List [show]
Related topics

List [show]
V • T • E

References [edit]

1. ^ Heehs 1992, p. 6
2. ^ Gupta 2006, p. 160

Type here to search
25°C Haze ENG 18:36 27-10-2021

आजाद हिन्द फौज (I.N.A.)

- सुभाष चन्द्र बोस को जुलाई 1940 में 'भारत सुरक्षा कानून' के तहत गिरफ्तार करके कलकत्ता में बंद कर दिया गया था।
- लेकिन बोस के भूख हड़ताल करने पर 5 दिसम्बर 1940 को उन्हीं के घर में नजरबंद कर दिया गया था।
- 18 जनवरी 1941 को सुभाष चन्द्र बोस अपने घर से एक पठान जियाउद्दीन के वेश में फरार हो गये।
- भागने के क्रम में बोस सर्वप्रथम कार द्वारा गोमा गये और वहां से, रेल (फ्रन्टियर मेल) द्वारा पेशावर पहुंचे।
- तत्पश्चात भगतराम तलवार की सहायता से वे काबुल पहुंचे।

© Dr. Amit Kumar Singh

- काबुल से उन्होंने आरलैन्डो मैजोन्टा नामक एक इटालियन जाली पासपोर्ट की व्यवस्था की और हवाई जहाज द्वारा सोवियत संघ की राजधानी मास्को पहुंचे।
- मास्को से वो 28 मार्च, 1941 को बर्लिन पहुंचे।
- बर्लिन में इन स्वागत हिटलर के प्रमुख सहायक रिबेनट्राप ने किया।
- यहीं पर सुभाष चन्द्र बोस को हिटलर ने 'नेता जी' की उपाधि प्रदान की जैसे कि मुसोलिनी को इलड्यूस, हिटलर को डेर फहरर तथा फ्रैंकों को एल कौडिल्लो की उपाधियाँ मिली थीं।
- इन सभी का अर्थ 'नेता' ही होता है।

© Dr. Amit Kumar Singh

- बर्लिन में ही हिटलर ने सुभाषचन्द्र बोस की बर्लिन रेडियो से ब्रिटिश विरोधी प्रचार करने तथा जर्मनी मे भारतीय युद्धबंदियों से एक 'आजाद हिन्द फौज' स्थापित करने की आज्ञा प्रदान की।
- यहीं पर इन्होंने आजाद हिन्द रेडियों की स्थापना की तथा जनवरी 1942 तक बोस ने दो सैनिक दस्ते श्री तैयार कर लिए।
- नेताजी ने इसके बाद रोम और पेरिस में भी स्वतंत्र भारत केन्द्र (Free India Center) स्थापित किये थे।
- इसी समय जापान ने 15 फरवरी 1942 को सिंगापुर पर कब्जा करके हजारों भारतीय सैनिकों को युद्धबंदी बना लिया।
- इस कारण सिंगापुर बोस की फौज के लिए उपयुक्त था।

© Dr. Amit Kumar Singh



Mohan Nuraya] INA

Indian Independence League

नेताजी


大東亞結集

unacademy

आजाद हिन्द फौज
अगस्त क्रांति
सामान्तर सरकारें
शाही नौसेना का विद्रोह

Dr. Amit Kumar Singh

- **आजाद हिन्द फौज (I.N.A.) –**
- सुभाष चन्द्र बोस को जुलाई 1940 में भारत सुरक्षा कानून' के तहत गिरफ्तार करके कलकत्ता में बंद कर दिया गया था।
- लेकिन बोस के भूख हड़ताल करने पर 5 दिसम्बर 1940 को उन्हीं के घर में नजरबंद कर दिया गया था।
- 18 जनवरी 1941 को सुभाष चन्द्र बोस अपने घर से एक पठान जियाउद्दीन के वेश में फरार हो गये।
- भागने के क्रम में बोस सर्वप्रथम कार द्वारा गोमा

गये और वहां से रेल (फ्रन्टियर मेल) द्वारा पेशावर पहुंचे।

- तत्पश्चात भगतराम तलवार की सहायता से वे काबुल पहुंचे।
- काबुल से उन्होंने आरलैण्डो मैजोन्टा नामक एक इटालियन जाली पासपोर्ट की व्यवस्था की और हवाई जहाज द्वारा सोवियत संघ की राजधानी मास्को पहुंचे।
- मास्को से वो 28 मार्च, 1941 को बर्लिन पहुंचे।
- बर्लिन में इनका स्वागत हिटलर के प्रमुख सहायक रिबेनट्राप ने किया।
- यहीं पर सुभाष चन्द्र बोस को हिटलर ने 'नेता जी' की उपाधि प्रदान की।
- जैसे कि मुसोलिनी को इलड्यूस, हिटलर को डेर

फुहरर तथा फ्रैंकों को एल कौडिल्लो की उपाधियाँ मिली थीं।

"Delhi Chalo"

रंगून — आणादी

राष्ट्रीय गान 25 Aug 1943.

21 → सिंगापुर

Aug

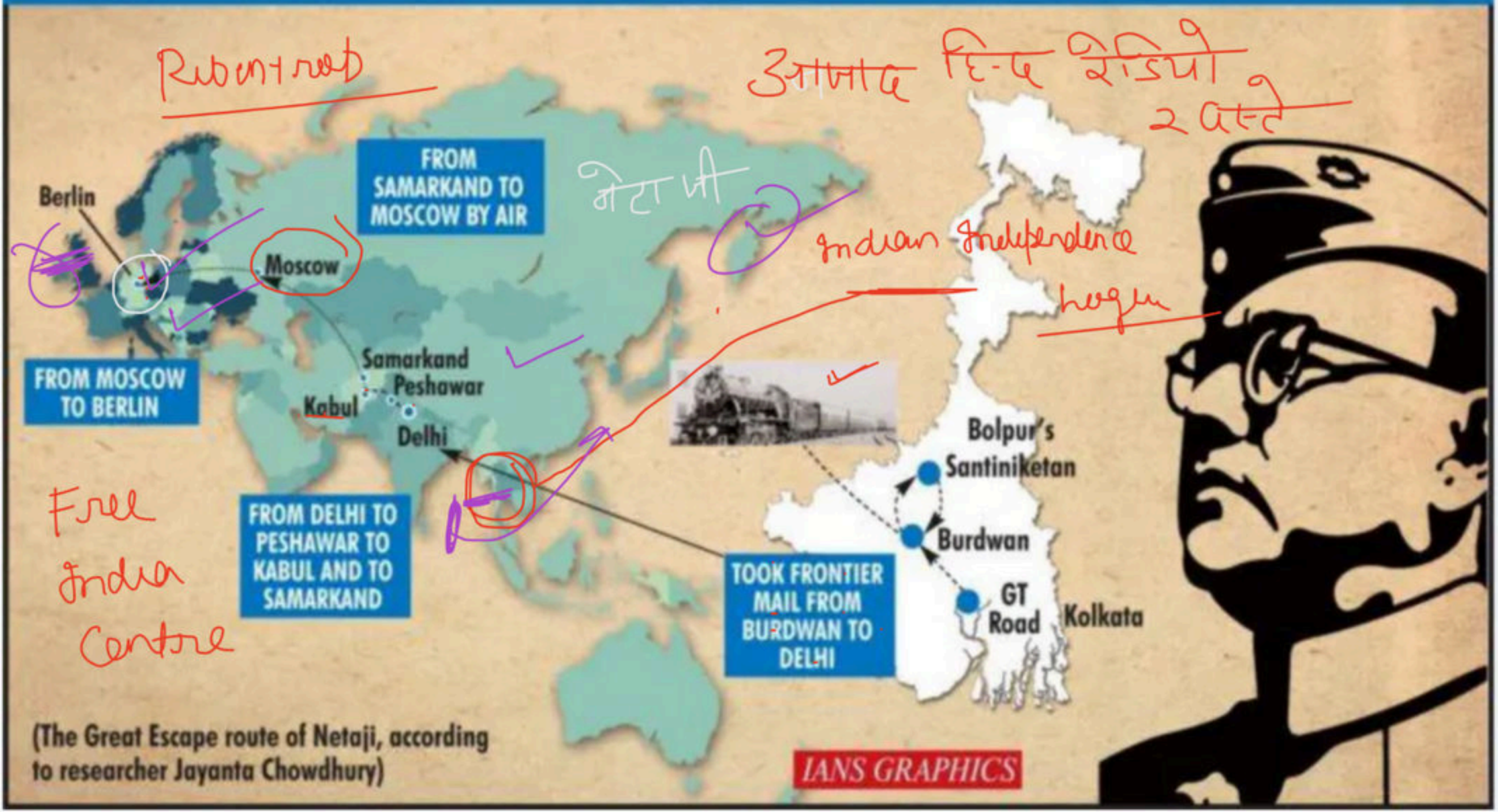


- इन सभी का अर्थ 'नेता' ही होता है।
- बर्लिन में ही हिटलर ने सुभाषचन्द्र बोस को बर्लिन रेडियो से ब्रिटिश विरोधी प्रचार करने तथा जर्मनी में भारतीय युद्धबंदियों से एक 'आजाद हिन्द फौज' स्थापित करने की आज्ञा प्रदान की।
- यहीं पर इन्होंने आजाद हिन्दी रेडियो की स्थापना की तथा जनवरी 1942 तक बोस ने दो सैनिक दस्ते भी तैयार कर लिए।
- नेताजी ने इसके बाद रोम और पेरिस में भी स्वतंत्र भारत केन्द्र (Free India Center) स्थापित किये थे।

- इसी समय जापान ने 15 फरवरी 1942 को सिंगापुर पर कब्जा करके हजारों भारतीय सैनिकों को युद्धबंदी बना लिया।
- इस कारण सिंगापुर बोस की फौज के लिए उपयुक्त था।
- यही समय था जब दिल्ली बम कांड से भागकर जापान में बसे रासबिहारी बोस, जापान में ही इंडियन इण्डिपेंडेंस लीग की स्थापना का प्रयास कर रहे थे।
- इन्हीं की कोशिशों से 28 से 30 मार्च 1942 को टोकियो में भारतीयों का एक सम्मेलन आयोजित हुआ।
- जिसमें कैप्टन मोहन सिंह, रास बिहारी बोस

एवं निरंजन सिंह गिल के सहयोग से भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) का गठन किया गया।

HOW NETAJI REACHED BERLIN



(The Great Escape route of Netaji, according to researcher Jayanta Chowdhury)

https://indianewengland.com/2021/01/researcher-shares-netajis-great-escape-route/

- इसके लिए 1942 में एक सम्मेलन बैंकाक में आयोजित करने का फैसला लिया गया।
- परिणामस्वरूप 23 जून 1942 को बैंकाक में भी भारतीयों का सम्मेलन हुआ।
- इसमें विभिन्न देशों के 100 भारतीय प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।
- सम्मेलन की अध्यक्षता रास बिहारी बोस ने ही की थी।
- इस सम्मेलन में 'इंडियन इंडिपेंडेंस लीग' की स्थापना की गई और सभाष चंद्र बोस को पूर्वी एशिया बुलाने का निर्णय लिया गया।
- बैंकाक सम्मेलन से पूर्व ही भारतीय सेना के कैप्टन मोहन सिंह ने ढाई हजार युद्धबंदियों को लेकर आजाद हिन्द फ़ोज की औपचारिक स्थापना कर दी थी।

- इन्हीं सैनिकों के प्रतिनिधि बैंकाक सम्मेलन में शामिल हुए थे।
- बैंकाक सम्मेलन में ही विधिवत आजाद हिन्द फौज को स्थापित किया गया था।
- लेकिन तमाम कठिनाईयों के कारण यह सेना जल्दी ही भंग हो गयी।
- फलस्वरूप रास बिहारी बोस ने सेना के पुनर्गठन की बागडोर नेताजी सुभाष चन्द्र बास को सौंपी जो 13 जून 1943 को टोकियो और 2 जुलाई 1943 को सिंगापूर पहुंचे।
- 4 जुलाई को बोस 'इण्डियन इंडिपेंडेंस लीग' के अध्यक्ष बने।
- यहीं पर नेताजी ने आजाद हिन्द फौज द्वारा

ब्रिटेन के विरुद्ध आक्रमण करने की घोषणा की।

- नेताजी 5 जुलाई, 1943 को सिंगापर के टाउन हाल के सामने सुप्रीम कमाण्डर के रूप में सेना को समबोधित करते हुए 'दिल्ली चलो' का नारा दिया एवं इसके साथ ही यह भी कहा कि, "हमारी मातृभूमि स्वतन्त्रता की खोज में है।
- तुम मझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।
- यह स्वतंत्रता देवी की माँग है।
- 25 अगस्त, 1943 को नेता जी ने आजाद हिन्द फौज को पुनर्गठित किया और इसके प्रमुख बने।
- 21 अक्टूबर 1943 को सिंगापुर के कैथेहाल में एक विशाल जनसभा में बोस ने आजाद हिन्द की अस्थाई सरकार
  बनाने की घोषणा की।

बैंकाक सम्मेलन

आजाद हिन्द फौज

आलोचना



- बोस इस सरकार के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा सेनाध्यक्ष तीनों थे।
- वित्त विभाग ए.सी. चटर्जी को, प्रचार विभाग एस.ए. अय्यर को तथा महिला संगठन लक्ष्मी स्वामीनाथन को सौंपा गया।
- बोस और उनके सहयोगियों ने शपथ लिया।
- इसके बाद गुरु रवीन्द्र नाथ टैगोर द्वारा रचित राष्ट्रीय गान हुआ।
- इस सरकार को जापान, जर्मनी, इटली, चीन, कोरिया, फिलीपीन्स, मान्चुको एवं आयरलैण्ड ने मान्यता दी थी।
- 25 अक्टूबर 1943 को सुभाषचन्द्र ने इस सरकार की तरफ से ब्रिटेन तथा अमरीका के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

- 6 नवम्बर, 1943 को जापान ने अपने कब्जे वाले दो भारतीय द्वीप अंडमान एवं निकोबार अस्थायी सरकार को सौंप दिये।
- 31 दिसम्बर, 1943 को आजाद हिंद फौज का इन पर कब्जा हो गया तथा इनका नामकरण क्रमशः शहीद और स्वराज द्वीप कर दिया गया।
- आजाद हिन्द सेना की कई ब्रिगेडें थीं जैसे महात्मा गांधी ब्रिगेड, अबुल कलाम आजाद ब्रिगेड, जवाहर लाल नेहरू ब्रिगेड और रानी लक्ष्मी बाई ब्रिगेड (महिला टुकड़ी)।
- इसके अलावा सुभाष ब्रिगेड भी थी, जिसके सेनापति शाहनवाज खां थे।
- ये सना जनवरी 1944 में रंगून पहुंची।



- इसके बाद 4 फरवरी 1944 को एक टुकड़ी रंगून से अराकन पहुंची।
- जहां मार्च में इसने ब्रिटिश सेना को परास्त किया।
- 14 अप्रैल, 1944 को मणिपुर के मोरांग स्थान पर भारत का तिरंगा लहराया गया।
- मई में आजाद हिन्द फाज न माउडोक में कदम रखा लेकिन साधनों के अभाव में इस सेना को पीछे हटना पड़ा।
- फिर भी फौज की एक टकड़ी जापानी सेना के

  साथ कोहिमा पहुंच गयी. थी।

- 6 जुलाई, 1944 ई0 को सुभाष चंद्र बोस रंगून रेडियो स्टेशन से गाँधी जी को राष्ट्रपिता कहते हुए उनके नाम जारी एक प्रसारण में अपनी स्थिति स्पष्ट की और आजाद हिन्द फौज द्वारा लड़ी जा रही इस निर्णायक लड़ाई की जीत के लिए उनकी शुभकामनाएँ मांगी।
- परन्तु बोस को जापानियों के आश्वासन के बावजूद आपेक्षित सहयोग नहीं मिल पाया।
- अस्तु द्वितीय विश्व युद्ध में जापान की सेनाओं के मात खाने के साथ ही आजाद हिन्द फौज को भी पराजय का सामना करना पड़ा।
- 13 अगस्त 1945 का बोस सिंगापुर पहुंचे।
- 18 अगस्त 1945 को बोस और हबीबुर्रहमान

टोकियो जाने के लिए फारमोसा हवाई अड्डे से
विमान पर रवाना हुए।



6 July 1944

राष्ट्रपिता

13 Aug

- लेकिन विमान उड़ते ही दुर्घटनाग्रस्त हो गया।
- उसके बाद बोस का पता नहीं चला यह आज पी रहस्य बना हुआ है।
- आजाद हिन्द फौज के सैनिकों एवं अधिकारियों को अंग्रेजों ने 1945 ई. में गिरफ्तार कर लिया।
- गिरफ्तार सैनिकों एवं अधिकारियों पर अंग्रेज सरकार ने दिल्ली के लाल किले में 5 से 11 नवम्बर, 1945 ई. तक मुकदमा चलाया।
- इस मुकदमें के मुख्य अभियुक्त कर्नल सहगल, कर्नल ढिल्लों एवं मेजर शाहनवाज खां पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया।
- इनके पक्ष में सर तेज बहादुर सप्रू, जवाहर लाल नेहरू, अरूणा आसफ अली और के.एन. काटजू ने भूलाभाई देसाई के नेतृत्व में दलीलें दी।

- लेकिन इन तीनों को फांसी की सजा सुनाई गयी।
- इस निर्णय के खिलाफ पूरे देश में कड़ी प्रतिक्रिया हुई तथा नारे लगाये गये।
- "लाल किले को तोड़ दो, आजाद हिन्द फौज को छोड़ दो।"
- विवश होकर तत्कालीन वायसराय लॉर्ड वेवेल को अपने विशेषाधिकार का प्रयोग कर इनकी मृत्युदण्ड की सजा को माफ कर देना पड़ा।
- सुभाष चन्द्र बोस द्वारा भारत को स्वतंत्र करवाने का यह साहसी प्रयास हमारे स्वाधीनता संग्राम का एक स्वर्णिम अध्याय है जिसे हम और हमारी अगली पीढ़ियां कभी नहीं भूल पायेंगी।

1945

5—11 मे 1945

[सप्ताह ~~पिटले~~ साहसाचे]



अगस्त क्रांति (August Revolt 1942 ई.)

- भारत छोड़ो आन्दोलन;
- प्रस्ताव प्रस्तुत : 14 जुलाई, 1942 को कांग्रेस के वर्धा (गुजरात) अधिवेशन में 'भारत छोड़ो प्रस्ताव' प्रस्तुत किया गया।
- प्रस्ताव पारित : 8 अगस्त, 1942 को मौलाना अबुल कलाम की अध्यक्षता में बम्बई के ऐतिहासिक ग्वालिया टैंक के मैदान में अखिल भारतीय कांग्रेस की एक बैठक हुई।
- जिसमें वर्धा प्रस्ताव की पुष्टि कर दी गई। अर्थात् 'भारत छोड़ो प्रस्ताव' पास कर दिया गया।
- प्रमुख नारा : 'करो या मरो' गांधी द्वारा।

- मुख्य गिरफ्तारी : मौलाना अबुल कलाम आजाद, सहित कांग्रेस के सभी प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।
- गिरफ्तार करने के बाद गांधी जी, कस्तूरबा गांधी, महादेव देसाई और सरोजनी नायडू को आगा खां पैलेस में रखा गया।
- जवाहर लाल नेहरू, गोविन्द बल्लभ पंत, डॉ. प्रफुल्ल चन्द्र घोष, डॉ. पट्टाभि सीतारमैय्या, डॉ. सैय्यद महमूद तथा आचार्य कृपलानी को अहमद नगर में कैद रखा गया।
- राजेन्द्र प्रसाद को पटना (बांकीपुर) एवं जय प्रकाश नारायण को हजारीबाग सेन्ट्रल जेल में रखा गया।
- यह गिरफ्तारी 9 अगस्त की सुबह 'आपरेशन जीरो

  आवर' के तहत की गई थी।

- 'भारत छोड़ो आंदोलन' गांधी जी द्वारा आयोजित आंदोलन था।
- किन्तु न चाहते हुए भी यह आंदोलन क्रांतिकारी आन्दोलन बन गया।
- ब्रिटिश साम्राज्य की दमनकारी नीति ने इसे हिंसात्मक मोड़ प्रदान किया।
- फलतः यह भारतीय जनता के ब्रिटिश शासन के विरुद्ध चरम आक्रोश का प्रतीक हो गया।
- भारत अब पूर्ण स्वतंत्रता से कम कुछ नहीं चाहता था।
- अंग्रेजों का भारत छोड़ना निश्चित हो गया।
- यह ब्रिटिश साम्राज्यवाद को बड़ा भारी अघात था।

- क्रिप्स के वापस जाने के बाद भारतीयों को बड़ी निराशा हुई। युद्ध की परिस्थितियां गंभीर होती जा रही थी।
- जापान ने सिंगापुर, मलाया और वर्मा पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया था और वह भारत की ओर बढ़ रहा था।
- 10 मई, 1942 के 'हरिजन' में गांधी जी ने लिखा कि "भारत में अंग्रेजों की उपस्थिति जापानियों को भारत पर आक्रमण करने का निमंत्रण है।
- उनके जाने से यह लोभ समाप्त हो जायेगा।
- 14 जुलाई को वर्धा प्रस्ताव द्वारा कांग्रेस की

कार्यकारिणी ने भी इस दृष्टिकोण का समर्थन किया।

1942

Operation Zero Hour

वर्धा

[बंबई]

Do / Die

[भूमिगत गतिविधियां]

उषा मेहता।



By No machine-readable author provided. Dore chakravarty~commonswiki assumed (based on copyright claims). - No machine-readable source provided. Own work assumed (based on copyright claims)., CC BY-SA 2.5, https://commons.wikimedia.org/w/index.php?curid=339552

- जनता में दिन-प्रतिदिन यह भावना जोर पकड़ती जा रही थी कि कांग्रेस शीघ्र ही किसी न किसी रूप में जन-आन्दोलन आरम्भ करेगी।
- 1 अगस्त को तिलक दिवस पर इलाहाबाद में बोलते हुए पण्डित नेहरू ने कहा, “हम आग के साथ खेलने जा रहे हैं।
- हम दोधारी तलवार का प्रयोग करने जा रहे हैं, जिसकी चोट उल्टे हमारे ऊपर पड़ सकती है।“
- इसी समय राजेन्द्र बाबू ने अपने एक भाषण में जनता को सचेत करते हुए कहा, "हमें इस बार गोली खाने और तोप का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए।"

- बम्बई में भाषण करते हुए सरदार पटेल ने कहा, "इस बार का आन्दोलन थोड़े दिनों का है किन्तु बहुत ही भयानक होगा।"
- नेताओं के इस प्रकार के भाषणों ने आने वाले भयानक संघर्ष की पृष्ठ-भूमि की पुष्टि कर दी।
- इस समय राजगोपालचारी ने गांधी जी को एक पत्र लिखते हुए इस बात का परामर्श दिया कि कांग्रेस को मुस्लिम लीग की पाकिस्तान सम्बन्धी मांग एक अनिवार्य बुराई के रूप में स्वीकार कर लेना चाहिए।
- इसी समय कम्युनिस्ट पार्टी ने भी कांग्रेस को संघर्ष न छेड़ने की सलाह दी।
- जनता के व्यापक असन्तोष को देखकर 8

अगस्त, 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस
कमेटी ने अपने बम्बई के ऐतिहासिक अधिवेशन
में प्रसिद्ध 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

- इसी दिन (8 अगस्त) महात्मा गांधी ने अधोलिखित विचार दिये।

1. सरकारी कर्मचारी नौकरी न छोड़ें लेकिन कांग्रेस के प्रति अपनी निष्ठा की घोषणा कर दें।

2. सैनिक अपने देशवासियों पर गोली चलाने से इंकार कर दें।

3. छात्र तभी पढ़ाई छोड़ें जब आजादी प्राप्त हो जाने तक अपने इस निर्णय पर दृढ़ रह सकें।

4. राजा-महाराजा भारतीय जनता की प्रभुसत्ता स्वीकार करें और उनकी रियासतों में रहने वाली जनता अपने को भारतीय राष्ट्र का अंग घोषित कर दे तथा राजाओं का नेतृत्व तभी मंजूर करें जब वे अपना
भविष्य जनता के साथ जोड़ लें।

- 9 अगस्त को प्रातःकाल महात्मा गाँधी के साथ कांग्रेस कार्यकारिणी के सब सदस्यों को गिरफ्तार करके नजरबंद कर दिया गया।
- नेताओं की अनुपस्थिति में जनता ने सरकार की चुनौती का डटकर उत्तर दिया।
- सरकार ने भी आन्दोलन का दमन करने के लिए दमनात्मक नीति का अनुसरण किया।
- प्रदर्शनि तथा सभाओं को लाठियां चलाकर भंग किया गया।
- स्थान-स्थान पर पुलिस तथा सेना ने गोलियां चलायीं जिससे सैकड़ों निर्दोष व्यक्ति मारे गये।



- समाचार-पत्रों की स्वतन्त्रता समाप्त कर दी गई तथा कांग्रेस को अवैध घोषित कर दिया गया।
- जनता भी क्रोधाग्नि से पागल हो उठी तथा उसने भी हिंसात्मक कार्य प्रारम्भ कर दिये।

जन विद्रोह

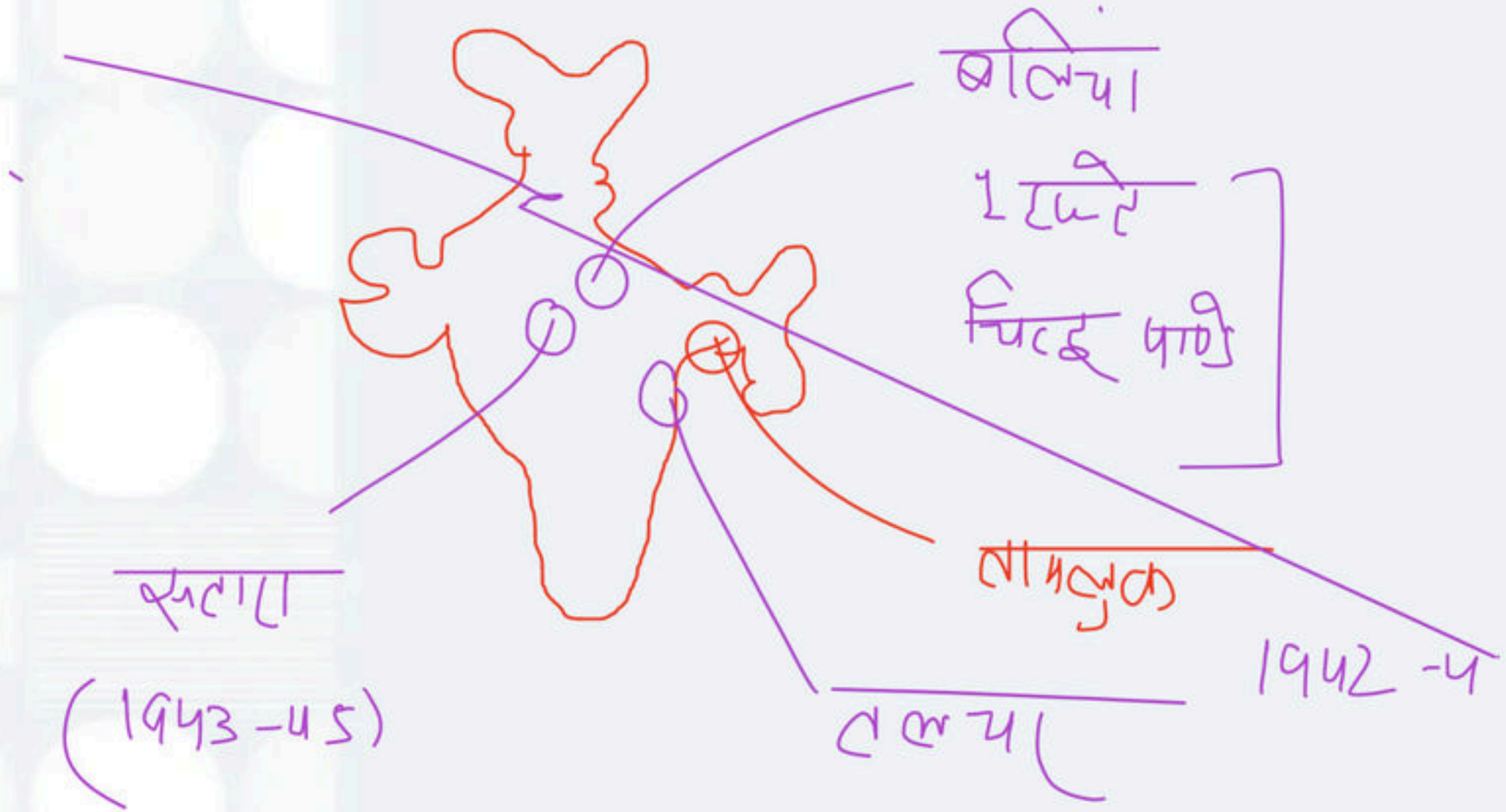
- जनता ने सरकारी सत्ता के प्रतीकों पर आक्रमण किया तथा सरकारी भवनों पर बलपूर्वक तिरंगा फहराया।
- सत्याग्रहियों ने गिरफ्तारियां दी, पुल उड़ा दिये गये, रेलों की पटरियाँ उखाड़ दी गयीं तथा तार एवं टेलीफोन की लाइनें काट दी गयीं।

- शिक्षण संस्थाओं में छात्रों ने हड़ताल कर दी, छात्रों द्वारा जुलूस निकाले गये, उन्होंने गैरकानूनी पर्चे लिखे, जगह-जगह उन्हें बांटने लगे तथा भूमिगत कार्यकर्ताओं के लिये संदेशवाहक का कार्य किया।
- अहमदाबाद, बम्बई, जमशेदपुर, अहमदनगर एवं पूना में मजदूरों ने हड़ताल कर दी।

भूमिगत गतिविधियाँ

- भूमिगत गतिविधियों के संचालन का कार्य मुख्यतः समाजवादी, फारवर्ड ब्लॉक के सदस्य, गांधी आश्रम के अनुयायी तथा क्रांतिकारी आतंकवादियों के हाथों में रहा।
- बंबई, पूना, सतारा, बड़ौदा तथा गुजरात के अन्य भाग, कर्नाटक, आन्ध, संयुक्त प्रांत, बिहार एवं दिल्ली इन गतिविधियों के मुख्य केंद्र थे।

- राममनोहर लोहिया, जय प्रकाश नारायण, अरूणा आसफ अली, उषा मेहता, बीजू पटनायक, छोटू भाई पुराणिक, अच्युत पटवर्धन, सुचेता कृपलानी तथा आर.पी. गोयनका भूमिगत गतिविधियाँ संचालित करने वाले अग्रगण्य नेताओं में से थे।
- बम्बई तथा नासिक में भूमिगत रेडियो स्टेशन की स्थापना की गई।
- उषा मेहता, राम मनोहर लोहिया एवं वी.एम खाकर ने भूमिगत कांग्रेस रेडियों का संचालन किया।
- भूमिगत गतिविधियों में संलग्न लोगों को व्यापक सहयोग मिल रहा था।
- उन्हें बड़ी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद दिया गया।


बलिया
सतारा
(1943-45)
तामलुक
तमलुक
1942-44



- इन आंदोलनकारियों का मुख्य उद्देश्य यह होता था कि सरकारी भवनों, संचार तथा यातायात के माध्यमों तथा अन्य सरकारी प्रतिष्ठानों पर हमले किये जाएँ तथा जो व्यक्ति सरकार के समर्थक हैं या सरकार के लिये जासूसी करते है, उन्हें मौत के घाट उतार दिया जाये।

समानांतर सरकारें

- भारत छोड़ो आंदोलन की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी, देश के कई स्थानों में सामानांतर सरकारों की स्थापना :
- **बलिया (अगस्त 1942 में, केवल एक सप्ताह के लिए):** यहाँ चित्तू पांडे के नेतृत्व में समांनातर सरकार की स्थापना दी गयी।
- उनकी सरकार ने स्थानीय जिलाधिकारी से शासन के सभी अधिकार छीन लिये तथा जेल में बंद सभी कांग्रेस नेताओं को रिहा कर दिया।

- **तामलुक (मिदनापुर, दिसम्बर, 1942 से सितम्बर 1944 तक) :** यहाँ की जातीय सरकार ने तुफान पीडितों के लिए सहायता कार्यक्रम प्रारंभ किए, स्कूलों को अनुदान दिये, धनी लोगों का अतिरिक्त धन गरीबों में बांटा तथा एक सशस्त्र विद्युत वाहिनी का गठन किया।
- इस वाहिनी की सदस्या मातंगिनी हजारा की आन्दोलन के दौरान गोली लगने से मृत्यु हो गई थी।
- **सतारा (1943 के मध्य से 1945 तक) :** यह सबसे लंबे समय तक चलने वाली सरकार थी।
- यहाँ प्रति सरकार के नाम से समानांतर सरकार स्थापित की गयी।
- सरकार की स्थापना में वाई.बी. चाह्वाण तथा

नाना पाटिल इत्यादि की प्रमुख भूमिका थी।

- सरकार के कार्यों में ग्रामीण पुस्तकालयों की स्थापना, न्यायदान मंडलों (जन अदालतों) का गठन, शराब बंदी अभियान तथा गांधी विवाहों का आयोजन जैसे कार्य सम्मिलित थे।
- इसके अलावा तलचर (ओडिशा) में भी कुछ समय तक सामानांतर सरकार बनी थी।
- भारत छोड़ों आंदोलन में आम जनता ने आंदोलनकारियों को अभूतपूर्व सहयोग प्रदान किया।
- समाज का कोई भी वर्ग सहायता एवं समर्थन देने में पीछे नहीं रहा।



- उद्योगपतियों (अनुदान, प्रश्रय एवं अन्य वस्तुओं के रूप में सहयोग), छात्रों (संदेशवाहक के रूप में सहयोग), सामान्य ग्रामीणों (सरकारी अधिकारियों को आंदोलनकारियों के संबंध में सूचनायें देने से इंकार), ट्रेन चालकों (ट्रेन में बम एवं अन्य आवश्यक वस्तुयें ले जाकर) तथा पुलिस एवं सरकारी अधिकारियों सभी ने आंदोलनकारियों को पूर्ण सहयोग प्रदान किया।
- यहाँ यह स्मरणीय है कि आन्दोलन में देश की कम्प्यूनिस्ट पार्टी और मुस्लिम लीग ने भाग नहीं लिया।
- सरकार की अत्याचार नीति के विरोध में महात्मा गांधी ने 21 दिनों का अनशन 12 फरवरी, 1943 को प्रारम्भ कर दिया।
- गांधी जी जेल में बीमार पड़ गया।

- गांधी जी की रिहाई की मांग करते हुए वायसराय की कार्य परिषद के तीन सदस्यों एम.एस. गनी, एन.आर. सरकार और एच.पी. मोदी ने त्याग पत्र दे दिया।
- ब्रिटिश सरकार गांधीजी को रिहा करने के बदले उनकी मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगी।
- इसी बीच 4 मार्च, 1943 को सरकार को भ्रमित करते हुए गांधी जी ने उपवास तोड़ दिया।
- 6 मई, 1944 को उन्हें जेल से मुक्त कर दिया गया।

शाही नौ-सेना का विद्रोह (1946)

(Revolt of the Royal Navy)

- आजाद हिन्द फौज, भारत छोड़ो आन्दोलन की घटनाएँ और द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात समस्त भारत में फैला जनआंदोलन का ही एक भाग थाः-18 फरवरी, 1946 का शाही -नो-सेना का विद्रोह।
- विद्रोह का प्रारम्भ बंबई के नौसैनिक प्रशिक्षण पोत एन0एस0 तलवार के नौसैनिकों द्वारा किया गया था।
- इसका प्रमुख कारण खराब भोजन, कम वेतन,

नस्ली अपमान और प्रतिशोध का रवैया अपनाना था।

- शीघ्र ही यह विद्रोह करांची, मद्रास तथा कलकत्ता तक फैल गया।
- विद्रोहियों ने जहाजों से ब्रिटिश यूनियन जैक उतारकर उसके स्थान पर कांग्रेस, लीग और कम्युनिस्ट पार्टी के ध्वज फहराए।
- हड़तालियों ने मि0 एम0 एस0 खान के नेतृत्व में एक हड़ताल समिति का गठन किया और माँग की कि भारतीय नौसैनिकों को अच्छा भोजन दिया जाये, उनका वेतन अंग्रेज सैनिकों के समान हो, आजाद हिन्द फौज के सैनिक व अधिकारी और सभी राजनीतिक बन्दी छोड़ दिये जायें तथा भारतीय सैनिकों को इण्डोनेशिया से वापस बुलाया जाये।
- इस प्रकार उनकी मांगों में वे माँगें भी सम्मिलित

थीं जिनकी माँग उस समय राष्ट्रीय नेता भी कर रहे थे।

- विद्रोहियों को शक्ति से दबाने का प्रयत्न किया गया।
- एडमिरल गाडफ्रे को भेजा गया, जिसने बमबारी करके नौ-सेना को नष्ट करने की धमकी दी।
- इसी समय नौसेना विद्रोह के समर्थन में 22 फरवरी, 1946 में बम्बई में एक अभूतपूर्व हड़ताल का आयोजन किया गया, जिसमें 2 लाख मजदूरों ने भाग लिया।
- विद्रोह में प्रायः 78 जहाज, नौ-सेना की 20 स्थलीय छावनियाँ और 20000 नौ-सैनिक सम्मिलित हो गये।
- सरकार के दमनात्मक रुख को देखते हुए बल्लभ भाई पटेल और जिन्ना ने नौसैनिकों को समर्पण करने के लिए आह्वान किया और आश्वासन के बाद कि सैनिकों के साथ किसी भी प्रकार की दमनात्मक

कार्रवाई नहीं की जाएगी, विद्रोहियों ने 23 फरवरी,
1946 को आत्मसमर्पण किया।

- आजाद हिन्द फौज के निर्माण से अंग्रेजों का विश्वास भारतीय स्थल-सेना से उठ गया था।
- नौ-सेना के इस विद्रोह ने उनकी आशंका में वृद्धि की।
- उन्हें यह भय हुआ कि अब वे भारतीय नौ-सैनिकों पर भी विश्वास नहीं कर सकते थे।
- इस प्रकार यद्यपि भारत का क्रान्तिकारी आन्दोलन भारत को स्वतन्त्रता दिलाने में असफल हुआ।
- इसकी सबसे बड़ी दुर्बलता यह रही कि वह कभी लोकप्रिय जन-आन्दोलन न बन सका।
- लेकिन इसमें सन्देह नहीं कि इसने भारतीय

जनमत को गम्भीर रूप से प्रभावित किया।



- इन्होंने देश में राष्ट्रीय जागृति उत्पन्न की, सरकार को कार्यप्रणाली में सुधार करने के लिए विवश किया तथा विदेशी शासकों के हृदय में भय उत्पन्न किया।
- क्रान्तिकारियों ने अनेक बार विदेशियों द्वारा किए गए राष्ट्रीय अपमान का बदला लिया। इन्होंने सैनिकों में जागृति पैदा की।
- ये देश को आजादी दिलाने के लिए मील का पत्थर साबित हुए तथा इनके त्याग और बलिदान से देश की आजादी का मार्ग प्रशस्त हुआ।
- ब्रिटिश सरकार क्रान्तिकारियों के कार्यों से भयभीत थी।
- उनमें अभूतपूर्व साहस एवं देशभक्ति थी।

- क्रान्तिकारियों ने हँसते हुए भारत माता के चरणों में अपने प्राणों की आहुति दी।
- स्वतन्त्रता के इन महान् दीवानों की गाथा भारत के इतिहास में सदैव स्वर्णाक्षरों में लिखी रहेगी।
- वस्तुतः भारतीय स्वतन्त्रता में क्रान्तिकारी आन्दोलन का विशिष्ट और महत्त्वपूर्ण योगदान है तथा इनकी गतिविधियों से सरकार भारतीय तरुणाई की शक्ति और रक्त की महत्ता को समझ गई।
- क्रान्तिकारियों की गतिविधियों का यह प्रभाव हुआ कि 1946 ई0 में सेना ने भी विद्रोह कर दिया तथा दूसरी ओर से सुभाषचन्द्र बोस;

- जो आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनानायक थे, के सुयोग्य क्रान्तिकारी नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज ने जापानी सेनाओं के साथ ब्रिटिश भारत के पूर्वोत्तर इलाकों के तमाम भागों पर कब्जा कर लिया था।
- इसमें अण्डमान, निकोबार तथा कोहिमा व इम्फाल जैसे सामरिक महत्त्व के ठिकाने भी शामिल थे।
- यद्यपि क्रान्तिकारियों की शक्ति ब्रिटिश साम्राज्य की तुलना में कम थी फिर भी इन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ों को हिला दिया।
- ब्रिटिश शासकों में भय की भावना उत्पन्न की जिससे वे भारत को स्वतन्त्रता प्रदान करने के लिए विवश हुए।
- अतः भारत की स्वतन्त्रता में क्रान्तिकारियों

  का योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा।

इसे याद करें –

- I.N.A. (आजाद हिन्द फौज), ज्ञानी प्रीतम सिंह एवं मेजर आईवाची फूजीवारा का मानसिक पुत्र था, क्योंकि ये दोनों ही कैप्टन मोहन सिंह को 'इंडियन नेशनल आर्मी' का नेतृत्व करने के लिए प्रोत्साहित किये थे।
- मार्च 1942 में मोहन सिंह के नेतृत्व में I.N.A. का गठन किया गया था।
- इस आर्मी में जापान के 'मलय अभियान' के तहत पराजित ब्रिटिश सेना के भारतीय सैनिकों को सम्मिलित किया गया था।
- किन्तु जापानी सैनिकों से अविश्वास बढ़ने पर कैप्टन मोहन सिंह एवं निरंजन सिंह को बंदी बना लिया गया।
- इस प्रकार प्रथम आजाद हिन्द फौज का स्वतः विघटन हो गया।

- **क्या आप जानते हैं?**
- सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में I.N.A. का पुनर्गठिन 4 जुलाई, 1943 को मलय द्वीप (सिंगापुर द्वीप) पर किया गया था।
- यह नेतृत्व रास बिहारी बोस ने सुभाष बाबू को सौंपा था।
- भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान सुभाष चन्द्र बोस ने जर्मन विदेश मंत्रालय की सहायता से बर्लिन में 'द फ्री इंडिया सेंटर' का गठन 2 नवम्बर 1941 में किया था।
- ज्ञातव्य है कि उत्तरी अफ्रीका के रोमेल से पकड़े गए 'भारतीय युद्धबंदियों को भर्ती कर सुभाष चंद्र बोस ने 10 हजार सैनिकों का दल गठित कर उसे 'द फ्री इंडियन लीजन' संज्ञा प्रदान किया।

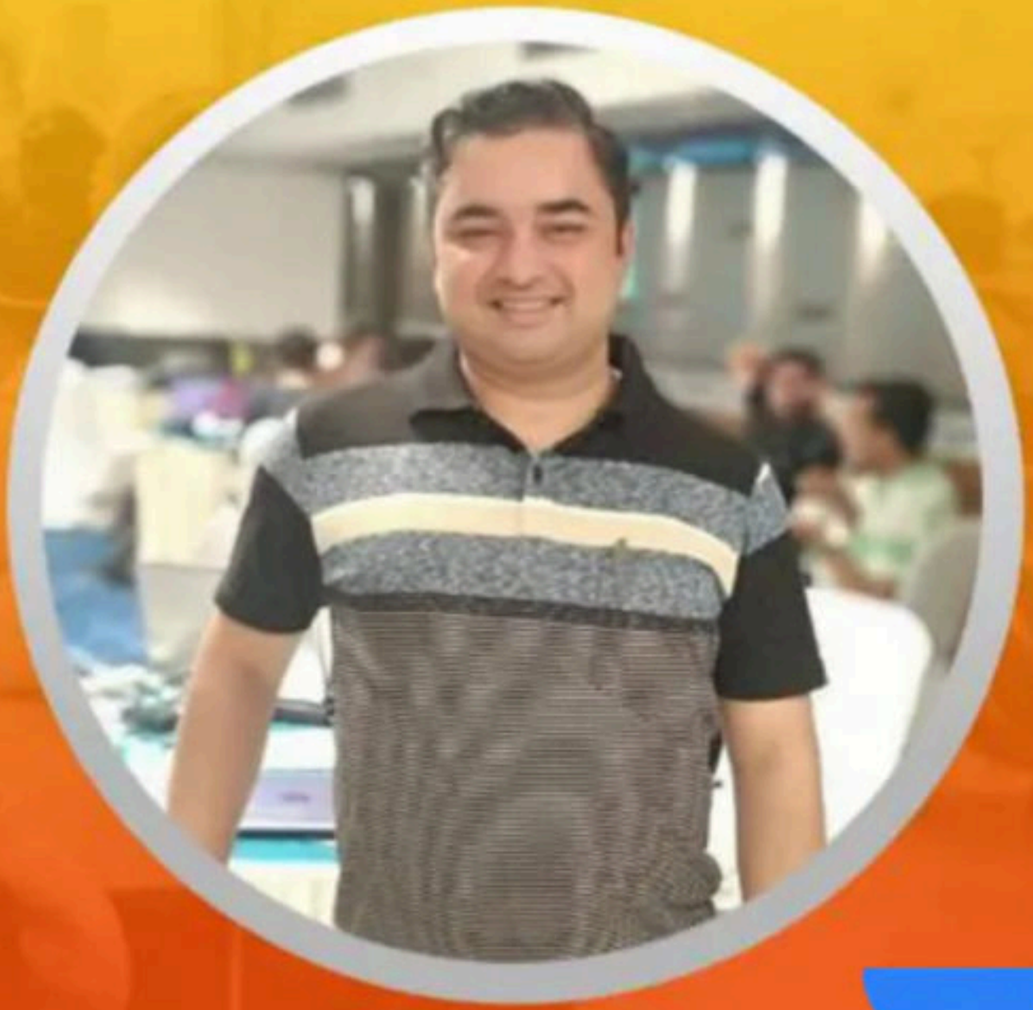
- **क्या आप जानते हैं?**
- 1938 ई0 में हरिपुरा में सम्पन्न भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष सुभाष चन्द्र बोस चुने गये थे।
- तदोपरान्त गुरु रवीन्द्र नाथ टैगोर द्वारा शांति निकेतन में सुभाष चन्द्र बोस को 'देश नायक' की उपाधि से सम्मानित किया गया था।
- महात्मा गांधी ने सुभाष बाबू को 'देश भक्तों का देशभक्त' उपाधि प्रदान की थी।
- इलाहाबाद में सम्पन्न कांग्रेस कार्यकारिणी समिति की बैठक में जवाहर लाल नेहरू भारत के नाजीवाद, फांसीवाद तथा साम्राज्यवाद विरोधी

निश्चित रुख के कारण जापान के विरुद्ध गुरिल्ला युद्ध
की अपनी योजना के पक्ष में बहुमत जुटाने में सक्षम हुए थे।

- **क्या आप जानते हैं?**
- I.N.A. के सैनिकों एवं अधिकारियों को गिरफ्तार कर ब्रिटिश सरकार ने 5 से 11 नवंबर 1945 तक दिल्ली के लाल किले में उन पर मुकदमा चलाया।
- इसमें तीन अभियुक्तों प्रेम सहगल, गुरुबख्श सिंह एवं शाहनवाज को फांसी की सजा तथा रासिद अली को 7 वर्ष के कारावास का दंड रोपित किया गया।
- इनके बचाव के लिए कांग्रेस ने आजाद हिंद फौज बचाव समिति का गठन किया।
- जिसमें भूलाभाई देसाई के नेतृत्व में तेज बहादुर सपू, कैलाश नाथ काटजू, अरुणा आसफ अली और जवाहर लाल नेहरू प्रमुख वकील थे।

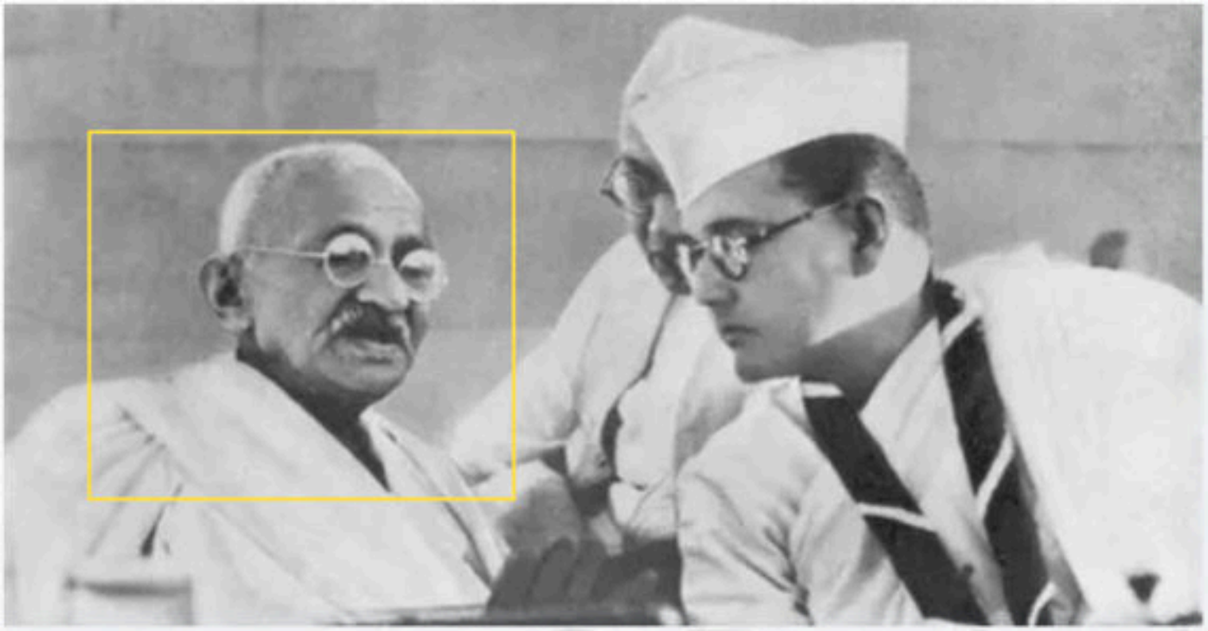
I ENJOYED TEACHING EACH AND EVERY MOMENT OF THE CLASS

Thank you!



- यही समय था जब दिल्ली बम कांड से भागकर जापान में बसे रासबिहारी बोस, जापान में ही इंडियन इण्डिपेंडेंस लीग की स्थापना का प्रयास कर रहे थे।
- इन्हीं की कोशिशों से 28 से 30 मार्च 1942 को टोकियो में भारतीयों का एक सम्मेलन आयोजित हुआ।
- जिसमें कैप्टन मोहन सिंह, रास बिहारी बोस एवं निरंजन सिंह गिल के सहयोग से भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) का गठन किया गया।
- इसके लिए 1942 में एक सम्मेलन बैंकाक में आयोजित करने का फैसला लिया गया।
- परिणामस्वरूप 23 जून 1942 को बैंकाक में भी भारतीयों का सम्मेलन हुआ।

© Dr. Amit Kumar Singh



© Dr. Amit Kumar Singh

याद रखें

- I.N.A. (आजाद हिन्द फौज), ज्ञानी प्रीतम सिंह एवं मेजर आईवाची फूजीवारा का मानसिक पुत्र था, क्योंकि ये दोनों ही कैप्टन मोहन सिंह को 'इंडियन नेशनल आर्मी' का नेतृत्व करने के लिए प्रोत्साहित किये थे।
- मार्च 1942 में मोहन सिंह के नेतृत्व में IN.A. का गठन किया गया था।
- इस आर्मी में जापान के 'मलय अभियान' के तहत पराजित ब्रिटिश सेना के भारतीय सैनिकों को सम्मिलित किया गया था।
- किन्तु जापानी सैनिकों से अविश्वास बढ़ने पर कैप्टन मोहन सिंह एवं निरंजन सिंह को बंदी बना लिया गया।
- इस प्रकार प्रथम आजाद हिन्द फौज का स्वतः विघटन हो गया।
- सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में I.N.A. का पुनर्गठन 4 जुलाई, 1943 को मलय द्वीप (सिंगापुर द्वीप) पर किया गया था।

याद रखें

- यह नेतृत्व रास बिहारी बोस ने सुभाष बाबू को सौंपा था।
- भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान सुभाष चन्द्र बोस ने जर्मन विदेश मंत्रालय की सहायता से बर्लिन में 'द फ्री इंडिया सेंटर' का गठन 2 नवम्बर 1941 में किया था।
- ज्ञातव्य है कि उत्तरी अफ्रीका के रोमेल से पकड़े गए 'भारतीय युद्धबंदियों को भर्ती कर सुभाष चंद्र बोस ने 10 हजार सैनिकों का दल गठित कर उसे 'द फ्री इंडियन लीजन' संज्ञा प्रदान किया।
- 1938 ई0 में हरिपुरा में सम्पन्न भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष सुभाष चन्द्र बोस चुने गये थे।
- तदोपरान्त गुरू रवीन्द्र नाथ टैगोर द्वारा शांति निकेतन में सुभाष चन्द्र बोस को 'देश नायक' की उपाधि से सम्मानित किया गया था।
- महात्मा गांधी ने सुभाष बाबू को 'देश भक्तों का देशभक्त' उपाधि प्रदान की थी।

याद रखें

- इलाहाबाद में सम्पन्न कांग्रेस कार्यकारिणी समिति की बैठक में जवाहर लाल नेहरू भारत के नाजीवाद, फांसीवाद तथा साम्राज्यवाद विरोधी निश्चित रुख के कारण जापान के विरुद्ध गुरिल्ला युद्ध की अपनी योजना के पक्ष में बहुमत जुटाने में सक्षम हुए थे।
- IN.A. के सैनिकों एवं अधिकारियों को गिरफ्तार कर ब्रिटिश सरकार ने 5 से 11 नवंबर 1945 तक दिल्ली के लाल किले में उन पर मुकदमा चलाया।
- इसमें तीन अभियुक्तों प्रेम सहगल, गुरुबख्श सिंह एवं शाहनवाज को फांसी की सजा तथा रासिद अली को 7 वर्ष के कारावास का दंड रोपित किया गया।
- इनके बचाव के लिए कांग्रेस ने आजाद हिंद फौज बचाव समिति का गठन किया।
- जिसमें भूलाभाई देसाई के नेतृत्व में तेज बहादुर सपू, कैलाश नाथ काटजू, अरुणा आसफ अली और जवाहर लाल नेहरू प्रमुख वकील थे।

- इसमें विभिन्न देशों के 100 भारतीय प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।
- सम्मेलन की अध्यक्षता रास बिहारी बोस ने ही की थी।
- इस सम्मेलन में 'इंडियन इंडिपेंडेंस लीग' की स्थापना की गई और सुभाष चंद्र बोस को पूर्वी एशिया बुलाने का निर्णय लिया गया।
- बैंकाक सम्मेलन से पूर्व ही भारतीय सेना के कैप्टन मोहन सिंह ने ढाई हजार युद्धबंदियों को लेकर आजाद हिन्द फौज की औपचारिक स्थापना कर दी थी।
- इन्हीं सैनिकों के प्रतिनिधि बैंकाक सम्मेलन में शामिल हुए थे।
- बैंकाक सम्मेलन में ही विधिवत आजाद हिन्द फौज को स्थापित किया गया था।

© Dr Amit Kumar Singh

- लेकिन तमाम कठिनाइयों के कारण यह सेना जल्दी ही भंग हो गयी।
- फलस्वरूप रास बिहारी बॉस ने सेना के पुनर्गठन की बागडोर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को सौंपी जो 13 जून 1943 को टोकियो और 2 जुलाई 1943 को सिंगापुर पहुंचे।
- 4 जुलाई को बोस 'इण्डियन इंडिपेंडेंस लीग' के अध्यक्ष बने।
- यहीं पर नेताजी ने आजाद हिन्द फौज द्वारा ब्रिटेन के विरुद्ध आक्रमण करने की घोषणा की।

© Dr. Amit Kumar Singh

I ENJOYED TEACHING EACH AND EVERY MOMENT OF THE CLASS

Thank you!

